महाराष्ट्र का 'नमन-खेले' लोकनाट्य

डॉ. संदीप बबन कदम

साठये कॉलेज, मुंबई, महाराष्ट्र

भारत के कई हिस्सों में 'लोकनाट्य' अलग-अलग रूपों में लंबे समय से चले आ रहे है। जैसे कर्नाटक में यक्षगान, आंध्रप्रदेश में कथकली, गोवा में दशावतार आदि। अधिकांश लोकनाट्यों का निर्माण विधी या कर्मकांड के रूप में हुआ होगा। लोकनाट्य के निर्माण के संबंध में प्रभाकर मांडे कहते हैं, "धार्मिक आस्था के मिलन स्थल पर खड़े होकर देवता पूजा के अंग के रूप में लोकनाट्य का प्रारंभिक चरण एक परंपरा बन गया है।"[१] अर्थात् यह कहा जा सकता है कि लोकरंगमंच की उत्पत्ति विधि की परंपरा से हुई है। गीतों और वाद्ययंत्रों के साथ-साथ अनुष्ठान के अवसरों में नृत्य और नाटक को जोड़ा गया। इससे यह कहा जा सकता है कि मनोरंजन और धार्मिक चिंतन, धार्मिक अनुष्ठानों का उद्देश्य प्राप्त हो गया है। इस अनुष्ठान पूजा के माध्यम से लोगों की आस्था, धार्मिक व्यवस्था भी जुडी गई। शरद व्यवहारे कहते हैं, "विधिपूजा ने एक अर्थ में रंगदेवता की पूजा का दर्जा हासिल कर लिया और लोक रंगमंच में अनुष्ठान के साक्षी के रूप में अनुष्ठान नाटक अस्तित्व में आया।"[२] आनुष्ठानिक लोकनाटक के माध्यम से लोकरंजन हो गये। कहा जा सकता है कि महाराष्ट्र में गोंधळ, दशावतार जैसे आनुष्ठानिक नाटकों ने लोगों को मंत्रमुग्ध करना शुरू कर दिया और लोक नाटकों ने समाज का मनोरंजन करना शुरू कर दिया।

'लोक परंपरा, धर्म, धार्मिक कार्य से संबंधित सामूहिक नाट्य आविष्कारों को लोकनाट्य कहा जा सकता है।'

महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में छह जिले (सिंधुदुर्ग, रत्नागिरी, रायगड, ठाणे, मुंबई और पालघर) शामिल हैं। इन सभी छह जिलों में आजीविका के साधन मुख्य रूप से कृषि, मछली पकड़ना और खेती, मजदूरी करना हैं। साथ ही, पारंपरिक देवी-देवताओं, उनके मेलों का इन जिलों में महत्वपूर्ण स्थान है। धर्म और संस्कृति का जनमानस पर प्रभाव पड़ता है। कोंकण क्षेत्र में दशावतार, नमन-खेले, जाखडी नृत्य, धालोस्तव, आदिवासी ठाकर कला, वारली कला, टिपरी नृत्य आदि कलाओं की जोपासना की गई है। ये कलाएं धार्मिक अनुष्ठानों और संस्कृति से जुड़ी हैं। उपरोक्त कुछ कलाओं का धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों, मेलों के आयोजन समय किया जाता है। उदा. होली के त्योहार के दौरान जाखडी नृत्य और धालोस्तव की कलाओं का प्रदर्शन किया जाता है।

महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले का 'नमन-खेले' एक महत्वपूर्ण लोकनाट्य है। यह लोकनाट्य कई गांवों में विभिन्न नमन मंडलों द्वारा किया जाता है। रत्नागिरी जिले में, नमन-खेले, एक 'लोक नाटक' रूप है, जिसे सदियों से कुनबी समुदाय द्वारा विकसित किया जाता रहा है। उनके कई नमन मंडल 'नमन-खेल' का प्रयोग करते हैं। रत्नागिरी जिले में मुख्य रूप से श्री भैरवनाथ, रावलनाथ, मार्लेश्वर, हरिहरेश्वर, नवलादेवी, भवानीदेवी, भैरी देवी, कालिकादेवी जैसे कई देवी-देवता हैं। यहा के लोग अपने त्योहार के शुभ अवसर पर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। रत्नागिरी जिले में कई नमन मंडल हैं। उदाहरण के लिए,

श्री नवलाई सांब नमन मंडल, फूटकवाड़ी, टिके, जिला, रत्नागिरी

बालविकास नमन मंडल, हातखंबा, जिला, रत्नागिरी

श्री गुडेकर नमन मंडल, सावर्डे, चिपलून, जिला, रत्नागिरी

मातलवाड़ी युवा प्रतिष्ठान नमन मंडल, गुहागर, जिला, रत्नागिरी

हनुमान सेवा नमन मंडल, रत्नागिरी, आदि।

'नमन-खेले शुभ अवसरों पर देवी-देवताओं को नमन (वंदन) करना और नृत्य-नाट्य कलाओं का प्रदर्शन करके देवी-देवताओं की भक्ति करके लोगों का मनोरंजन करना है।'

कुनबी समुदाय मुख्य रूप से खेती, कुआं खोदना, आम के फल के लिए काम करने जैसे कठिन कार्यों में लगा हुआ रहता है। वैकल्पिक रूप से वह आज भी करता है। इन कठिन कार्यों से उन्हें जो थकान महसूस हुई, उसे दूर करने के लिए, उन्होंने लोककथा, लोकगीतों, अभंगों की रचना की, वैकल्पिक रूप से खुद को और समाज का मनोरंजन करने के लिए। इसके साथ ही, यह संभव है कि यह खेल जैसा रवैया उनके पास आया क्योंकि उन्होंने संगीत वाद्ययंत्र और नृत्य को एक समर्थन के रूप में इस्तेमाल किया। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि लोक नाट्य का नमन-खेले रूप इसी अधिनियम से बना था। समय के साथ इसमें परिवर्तन होता रहा है और इसी कारण कहा जा सकता है कि लोकनाट्य का यह रूप 'नमन' और 'खेले' के रूपांकनों से सिद्ध हुआ है।

'नमन-खेले' में, व्यक्ति के कुलदेवताओं, ग्राम देवताओं, स्थानीय देवी-देवताओं, आसपास के देवी-देवताओं को नमन करता है। आमतौर पर ये बारह नमन होते हैं। देवताओं की संख्या अधिक होने पर बारह से अधिक नमन चढ़ाए जाते हैं। कोंकण क्षेत्र में मुख्य रूप से भगवान शंकर की पूजा की जाती है। इसलिए इस नमन में शंकर-पार्वती के कई रूप प्रस्तुत किए गए हैं। शंकर-पार्वती के रूप हैं; श्री रावलनाथ, श्री वर्णेश्वर, श्री भैरीदेव, जबकि पार्वती के रूप हैं श्री

कलकाई, नवलाई, श्री भवानी। इन देवी-देवताओं को मनाने के लिए होली के त्योहारों के अवसर पर 'नमन-खेले' किए जाते हैं। इसी से 'समुहभावना' अपनाई गई है।

नमन-खेले के प्रकार

नमन-खेले लोकनाट्य के 'फिरती के खेले' और 'वस्ति के खेले' ये दो प्रकार कहे जा सकते हैं। 'फिरती के खेले' मुख्य रूप से होली के त्योहार के अवसर पर किये जाते है। रत्नागिरी जिले के विभिन्न गाँवों में मुख्य रूप से 'होलीपूर्णिमा' से पहले और बाद में घर-घर जाकर होली का त्योहार मनाया जाता है। इसमें नमन और गीत (रामायण-महाभारत के संदर्भ) का प्रदर्शन किया जाता है। इसके साथ ही कुछ गीत (संकासुर, कृष्ण, राधा) संगीतमय ताल पर नृत्य करते हैं। घर-घर में इस नमन-खेले का उत्साह के साथ स्वागत किया गया। इन नमन-खेलों के लिए बिदागी कुछ अन्न या धन के रूप में दी जाती है।

शुभ अवसर पर रात के समय मे 'वस्ति के नमन-खेले' लोकनाट्य का प्रदर्शन किया जाता है। इसमें पूर्वरंग और उतरंग के जरिए दर्शकों का मनोरंजन किया जाता है। ये नमन-खेल समतल मंच (आंगन, मंदिर के सामने आदि) पर किया जाता हैं।

उपरोक्त दोनों प्रकार के नमन-खेले के कर्ताधर्ता किसान हैं। इसमे कोई नमन मंडली मे जो बुजुर्ग है वो मुख्य रूप से आयोजन कर्ता होता है। उनकी मदद से अन्य सभी कलाकार इस लोकनाट्य का प्रदर्शन करते हैं। नमन-खेले का निर्देशन सूत्रधार या गाँव के बुजुर्गों द्वारा किया जाता है। इसलिए, एक निर्देशक समान नहीं होता है। नमन-खेले कई लोगों के अनुभव, नैतिकता और अवलोकन से आकार लेते हैं। मौखिक, मुखर अभिनय और स्पष्ट गरिमापूर्ण आवाज और हाव-भाव के दम पर यह लोकनाट्य दर्शकों के सामने खड़ा होता है। वर्षों से चले आ रहे इस नमन-खेले लोकनाट्य के स्वरूप में कोई खास बदलाव नहीं आया है।

नमन-खेले के पूर्वरंग में नमन की रस्म को आस्था और श्रद्धा भाव के रूप मे दर्ज किया जाता है। साथ ही, 'नांदी विधि', जो भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में आपके पास आती है, समग्र रूप से आदिम आस्था का एक हिस्सा है। इसे आदिम आस्था का शास्त्रोक्त रूप से विकसित रूप कहा जा सकता है। नांदी में देवी-देवताओं, प्रकृति, रंगों आदि की पूजा की जाती है। यह भूमिका हम नमन-खेले लोकनाट्य के पूर्वरूप में देखते हैं। आमतौर पर कहा जाता है कि इस लोकनाट्य का उदय आठवीं शताब्दी में हुआ था। अतः आप यहाँ लोक नाटक के इस रूप की प्राचीनता देख सकते हैं।

'नमन-खेले' संरचना

'नमन-खेले' शुरू होने से पहले, सबसे पहले यजमान (जिसके घर पर नमन-खेले हैं) कलाकारों को गंध लकाकर और श्रीफल देकर आरती करते हैं। उसके बाद ग्राम देवता को चुनौती दी जाती है और तभी नमने शुरू होती है।

'नमन-खेले' लोकनाट्य पूर्वरंग और उत्तरंग ऐसे दो भागों में बांटा गया है। इस लोकनाट्य के पूर्वरंग में पूर्वार्ध और उत्तरार्ध है। पूर्वार्ध में देवी-देवताओं को नमन किया जाता है। ये नमन मुख्यतः बारह होते हैं। लेकिन कभी-कभी आसपास के क्षेत्रों में देवी-देवताओं का आह्वान करने के लिए बारह से अधिक पूजा-अर्चना की जाती है। नमन-खेले मंडल के क्षेत्र में सबसे पहले देवी-देवताओं को नमन करने की प्रथा है। उदाहरण के लिए, धरनी माता के साथ, ग्राम देवता, सीमा रक्षक देवता, गुरु और दर्शकों की भी पूजा की जाती है। सामान्य तौर पर नीचे दिये गये उदाहरण के अनुसार नमन किये जाते है।

उदाहरण-

१) अहो प्रथम प्रणाम। गणेश जी।

अहो दुसरे नमन। धरती माँ को।

और

२) अहो प्रथम नमन । धरती माता को प्रणाम।

दुसरं नमन । आकाश मेघ को ।

तीसरा नमन । त्रिलोकी देवता।

चौथा प्रणाम। पांचों पांडव।

बारहवीं नमन बैठी हुयी सभा को।

(१. अहो पहिले नमन । गणपती देवाला ।

अहो दुसरे नमन । धरतरी मातेला ।

किंवा

२. पयलं नमनं, धरती मातेला।

दुसरं नमन। आकाशी मेघाला ।

तिसरं नमनं। तिरलोकी देवाला।

चवथं नमनं। पाचही पांडवांना ।

बारावं नमन बैसला सभेला।)

नमन के पूर्वार्थ मे सादर होनेवाले नमन मुख्य रूप से बोली में प्रदर्शित किये जाते है। ऐसा प्रतीत होता है कि स्थान और क्षेत्र के अनुसार देवी-देवताओं को प्रणाम करने की यह प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। महाराष्ट्र के अनेक लोकनाट्यों में वंदन करने की प्रथा है। दशावतार, गोंधळ आदि की भांति यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि नमन-खेले में नमन तथा उक्त लोकनाट्य में नमन के आख्यान एक ही नहीं हैं।

नमन-खेले में 'नमन' गायन, वादन और नृत्य के संयोजन से किया जाता है, जिसमें नृत्य-नाट्य खेल भी शामिल है। इसमे नमन टाल और मृदुंग ये वादयों के आधार पर विशिष्ट पदन्यास करके किया जाता है। कुल मिलाकर नमन के पूर्वार्ध में नृत्य-नाटक-संगीत का समावेश होता है। ये नृत्य-नाट्य-संगीत के खेल देवताओं को आकृष्ट करने के लिए किए जाते हैं।

नमन के पूर्वार्ध के दूसरे भाग में सबसे पहले गणेशजी का मंचन किया जाता है। मंच स्थान में इन गणेश की ठीक से पूजा करने के लिए, पुरुष और महिला नामक के दो पात्र मंच पर आते हैं और विश्वास के साथ उन्हें प्रणाम करते हैं। एक तरह से यह नमन-खेले में एक पारंपरिक विधी है, अगले 'खेल' को बेहतर बनाने के लिए यहां गणेश पूजन की रस्म को महत्वपूर्ण माना जाता है। अगला 'खेल' भगवान गणपति के आशीर्वाद से शुरू होता है। गणपति वंदना के बाद, विभिन्न वेशभूषा में सजे पात्र मुख्य रूप से सार्वजनिक मनोरंजन के लिए थिएटर स्पेस में प्रवेश करते हैं। संकासुर, नटवा आदि, पात्र गीत और संवाद से लोकरंजन को हास्य शैली में प्रस्तुत करते हैं। मंच पर तैयार ये पात्र पूर्व-रंगमंच स्थितियों से मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक रीति-रिवाजों और संकेतों को दिखाते हैं।

'नमन-खेले' के पूर्वार्ध के दूसरे भाग में (उत्तरार्थ), गणपति गीत के बाद, कृष्ण-गवलन-मावशी-कृष्ण मित्र (पेंदया, सुदामा) यह पात्रों के साथ 'कृष्णअवतारदर्शन' का नाट्यरूपण है। 'कृष्ण अवतारदर्शन' को नमन-खेले का अहम हिस्सा माना जाता है। इस नाट्य आयोजन को लेकर दर्शक भी काफी उत्सुक हैं। (कभी-कभी कुछ दर्शक इस नाटक को देखकर भी चले जाते

हैं।) मुख्य रूप से इसे नमन-खेले में 'मध्यांग' के नाम से जाना जाता है। इस नाट्य आयोजन में नृत्य-नाटक-गायन-वाद्य का कलात्म संगम देखा जा सकता है।

उपरोक्त नाटकीय दृश्य में पहले गवलनी गोकुल से मथुरा के बाजार में दही और दूध बेचने जा रही है। उस समय, यह माना जाता है कि कृष्ण के अनुरोध पर पेंदया, सुदामा और कृष्ण के दोस्तों ने उनका रास्ता रोक दिया था। यह नाटक में मावशी, गवलनी और पेंदया के संवाद से हास्य का सृजन होता है। इस अवसर पर गवलनी की गीत रचना, उनका नृत्य यहाँ प्रस्तुत किया जाता है।

उदा. गवलन-

(१) 'दही दुधाचे माठ घेऊन चालतो मथुरेच्या बाजारी

दह्या दुधाचे नुकसान कान्हा तू का करी।'

२) 'कान्हा सोड आमुची वाट, आम्हा जाऊ दे बाजारी।'

इस दौरान कृष्ण का किरदार आता है। कृष्ण को गवलनियों द्वारा पहचाना नहीं जाता है। इसलिए कृष्ण अपने अवतारों का वर्णन करते हैं। इन सभी आयोजनों में संवाद, नृत्य, गीत, हास्य है। इन सभी घटनाओं का एक विशिष्ट कारण होता है। इसके माध्यम से यहां दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ-साथ देवी-देवताओं के बारे में लोगों का मन बनाने का काम किया जाता है। इसे यहां एक सौंदर्यतर समारोह के रूप में नोट किया जा सकता है।

'नमन-खेले' का 'उत्तररंग' एक विशेष कथा नाटक में गुंफा हुआ होता है। यह कथा-नाटक महाभारत, रामायण, लोककथाओं, पुराणों, ऐतिहासिक मिथकों पर आधारित है। यह पूरी तरह से काल्पनिक नाट्य रचना है। उत्तररंग में यह नाट्य रचना कथात्मक प्रकृति की है। यह कथानक सच्चाई, सृजन और बुराई के बीच संघर्ष की परिकल्पना करता है। हालांकि, अंत में, बुराई के विनाश और निर्माता की जीत की कल्पना की जाती है। निर्मित प्रवृत्ति को रेखांकित करने के लिए नायक को आदर्शवादी, शूरवीर और सदाचारी दिखाया गया है। वास्तव में, दर्शकों को अच्छी नैतिकता का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। नमन-खेले लोकनाट्य में उत्तररंग का यह रूप एक कला रूप है जो सामग्री और संरचना की दृष्टि से उतना ही सार्थक है जितना कि यह लोकगीतों, लोककथाओं का सूचक है। नमन-खेले संहिताबद्ध नाट्य तत्त्वों (पात्र, कथानक आदि) के माध्यम से एक काल्पनिक नाटक है। समकालीन जीवन में लोक प्रसंगों, लोकजीवन की दृष्टि यहाँ अधिक नहीं मिलती। यहाँ उसका उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है।

नमन-खेले के उत्तरंग में 'रावण प्रवेश' कहानी का अहम हिस्सा है। उत्तररंग में कथा नाटक के अंत में दर्शकों की ओर से 'रावण प्रवेश' का मंचन किया जाता है। 'सीता स्वयंवर की कहानी इसी किरदार के आने के साथ शुरू होती है। स्वयंवर में राम की जीत और रावण की हार। इसके बाद राम और रावण के युद्ध की कल्पना की जाती है। यह राम के पराक्रम और श्रेष्ठता को रेखांकित कर सृष्टि की प्रवृत्ति को निर्देशित करता है। और दर्शकों पर यह प्रभाव डाला जाता है कि अंत में दुष्ट का नाश हो जाता है।

रावण के उक्त प्रवेश के बाद वाद्यवृंद, कलाकार एवं कथानाटक के सभी कलाकार एक साथ आरती करके नमन-खेले लोकनाट्य का समापन करते हैं। इस समय, दर्शकों की रुचि और ऊनका भला हो, ये विचार प्रस्तुत किये जाते है। यह कलाकार और दर्शकों के बीच के बंधन को उजागर करता है।

रत्नागिरी जिले के कोंकण क्षेत्र में प्रदर्शित होने वाले इस ‘नमन-खेले’ लोक नाटक का संवर्धन मुख्य रूप से कुनबी समुदाय द्वारा किया जाता है। ‘नमन’ से लेकर ‘रावण वध’ तक के इस 'खेल' के लिए भले ही सरकार की तरफ से कोई सब्सिडी नहीं है, लेकिन इस लोक नाट्य का संवर्धन प्राचीन काल से यह समुदाय द्वारा की जाती रही है। आमतौर पर ‘नमन-खेले’ की शुरुआत कुनबी समुदाय द्वारा होली के त्योहार के आसपास की जाती है। उनके प्रयोग लंबे समय तक चलते रहते है। नमन-गण-गवलन (कृष्णनाट्य)-वगनाट्य-रावणनृत्य के क्रम में इस लोकनाट्य का प्रदर्शन करना इसका रंगतंत्र है।

पूर्वरंग मे नमन करने वाले कलाकार मुख्य रूप से लंबी पतलून, धोती, सिर पर रंगीन पगड़ी, शरीर और कंधों पर उपरान और गले में माला पहनते हैं। वे समान पोशाक में दो मृदंग वादकों द्वारा घिरे हुए हैं। प्रस्तुत लोकनाट्य श्रव्य-दृश्य है और उसमें हास्य की रचना की गई है। इससे दर्शकों का मनोरंजन होता है। (जैसे मावशी, पेंदया) यह हास्य रचना मुख्य रूप से बोली और हावभाव सादृश्य के माध्यम से है। नाटक में 'पेद्या' नामक पात्र हाथ में टेढ़ी-मेढ़ी लकडी लेकर आता है और उसकी टेढ़ी-मेढ़ी चाल तथा अनाड़ीपन उसकी अक्षमता को उजागर करने के लिए दर्शकों के सामने हास्य पैदा करता है। वास्तव में यह समाज में विकलांग व्यक्ति की दृष्टि है। यानी परंपरागत समाज से लेकर आज तक विकलांग व्यक्ति को मजाक के तौर पर तय किया जाने लगा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि उनकी विकलांगता का इस्तेमाल हास्य और मनोरंजन के लिए किया जा रहा है। यहाँ उसका उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है।

नाटक में 'नटवा' पात्र लौकिक मानव जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। चरित्र नटवा मानव पुरुष का मुखौटा पहनता है। सूत्रधार उसके साथ बातचीत करता है और जानना चाहता है कि वह कहाँ से आया है। उदाहरण के लिए,

'सूत्रधार : आप कहाँ से हैं?

नटवा : मैं देश से आया हूं।

सूत्रधार : कहा जाना है?

नटवा : कोंकन जाना है।

उपरोक्त संवाद लम्बे समय तक चलता रहता है। इसमें एक व्यक्ति को एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने का चित्रण किया गया है। जैसे यहाँ नटवा घाट (देश) से आया हो। यह उनकी कोंकण यात्रा है। वह इस यात्रा, मौज-मस्ती और खेलों की अपनी यादों को याद करता है, जिसमें कुछ हास्य भी जोड़ा जाता है। इसलिए यहां हास्य की प्राप्ति होती है। उस तरह यहां सामाजिक नीती-नियमों को भी दिखाया जाता है। साथ ही अलग-अलग प्रदेशों की सामाजिक व्यवस्था, खान-पान, व्यवहार, बोल-चाल को दिखाया जाता है। प्रस्तुत लोकनाट्य के पात्र आपनी भूमिका से एकाकार हो जाते हैं। भले ही सोंग के पोशाक पहना हो, फिर भी उस भूमिका मे जान डालते हैं।

'नमन-खेले' में चरित्र रचना के लिए प्रयुक्त वेशभूषा, रंगों का संकेत मिलता है। उदाहरण के लिए, काले रंग को राजा के चरित्र के लिए वर्जित माना गया है। उस तरह गणपति के चरित्र के लिए गौर वर्ण का प्रयोग किया जाता है। और चरित्र संकासुर काले रंग के कपड़े पहने हुए है। दूसरे शब्दों में, सुर-असुर का उपयोग यहाँ समाज में एक संदर्भ के रूप में किया जाता है जो यहाँ है। समाज में इस काले-गोरे जाति को समग्र रूप से यहाँ उजागर किया गया है। नमन-खेले के लोकनाट्य में यह वेषभूषा, रंग समाज में सामाजिक सोच, कूट व्यवहार व्यवस्था को दर्शाता है। साथ ही, कृष्ण के चरित्र को गहरे नीले रंग में रंगा गया है और सरमें मोरपंख के साथ चित्रित किया गया है। इसके माध्यम से लोगों के मन में विष्णु देवता के अवतार का निर्माण होता है। लोगों के मन में ईश्वर के प्रति आस्था की छाप डाली जाती है। राम-रावण युद्ध मे राम की जीत और रावण की हार दिखाई जाती है, एक तरिकेसे यह अंत मे दुष्ट प्रवृत्ती का विनाश होता है और सच्चाई की जीत होती है। पौराणिक पात्रो के द्वारा यह ज्ञान, शिक्षा दी जाती है, यह कह सकते है। इस 'नमन-खेले' लोकनाट्य के द्वारा धार्मिक कार्यों का लोकशिक्षण दिया जाता है। यह लोकनाट्य पौराणिक-धार्मिक-सामाजिक अनुबंध दर्शता है।

निष्कर्ष

- लोकनाट्य 'नमन-खेले' की संहिता अलिखित है। यह पौराणिक, ऐतिहासिक, लोककथाओं पर आधारित है। (राम-सीता, कृष्ण-राधा आदि) इस लोकनाट्य की संहिता सूत्र में पूर्वरंग में प्रणाम करने की रस्म से लेकर उत्तरंग में रावणवध तक गुंथी हुई है।
- सूत्रधार 'नमन-खेले' के पूर्व-रंग और उत्तर-रंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वह नमन के खेल को आगे बढ़ाने के लिए बयान देता है। उदा. नटवा के चरित्र के साथ उनकी बातचीत की तरह। या उत्तरंग मे सूत्रधार पात्र नारद के साथ कहानी सुनाना।
- 'नमन-खेले' का मंच एक 'खुला मंच' होता है। और दर्शकों को सामने या तीनों तरफ बैठाया जाता है। इस तरिकेसे कलाकार और दर्शक एक 'सम-स्थल' में आ जाते हैं।
- इस लोकनाट्य में पात्रों की वेशभूषा पात्रानुसार है। आसपास के क्षेत्र में उपलब्ध उपकरणों का उपयोग यहां किया जाता है। जैसे कोयला, पत्थर, मिट्टी, हल्दी आदि। कोयला का इस्तेमाल पात्रों की मूंछें निकालने के लिए या दानव के चेहरे को सजाने के लिए किया जाता था। या कुंकू का उपयोग होठों को रंगने के लिए किया जाता है। सोंग या मुखौटों को बनाने के लिए लकड़ी का उपयोग किया जाता है। उदा. गणपति, संकासुर, नटवा, राक्षस आदि।
- प्रस्तुत लोकनाट्य पहले गैसबत्ती और मशाल की रोशनी में किया जाता था। इसलिए, अभिनेताओं के रंग और वेशभूषा गहरे होते थे। यह मंद प्रकाश में अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। चूंकि रावण का वध इस खेल का चरम बिंदु माना जाता है। दसमुखवाले रावण की उनकी पोशाक और मुखौटा का रंग गहरा है।
- नाटकों में संवाद छोटे-छोटे वाक्यों में रचे गए हैं। इसका छोटा वाक्य-विन्यास सार्थक है और आशय सामग्री दर्शकों को समझाई जाती है। इसके संवाद दर्शकों के साथ तालमेलबद्ध संवाद होते हैं।
- नमन खेले लोकनाट्य के पात्रों को किसी प्रकार की अभिनय शिक्षा नहीं मिलती, बल्कि वे अनुभव और अवलोकन से बनते हैं। और वे प्राकृतिक अभिनय के माध्यम से कहानी को मूर्त रूप देते हैं। नमन-खेले में पुरुष महिला की भूमिका निभाते हैं। बाहरी कारकों की तुलना में उनका आंतरिक प्रदर्शन अधिक महत्वपूर्ण है। अभिनय, हावभाव, बोल, संवाद फेक और अन्य कारक उनके अभिनय को मजबूत बनाते हैं। प्राकृतिक अभिनय इस लोकनाट्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। क्योंकि शारीरिक गति, मुद्रा, हावभाव, पदन्यास, नृत्य इन्हीं प्राकृतिक अभिनय क्रियाओं से प्रतीत होते हैं।
- नमन-खेले लोकनाट्य में पद्न्यास को विशेष महत्व है। प्रारंभ से अंत मे रावण की कहानी तक पात्रों का पदन्यास एक विशिष्ट लय और ताल में होता हैं।

- पारंपरिक लोकवादयों के साथ संगीत के माध्यम से लोगों का मनोरंजन किया जाता है। टाल, झांझ, मृदुंग, संवदिका, ढोल ये प्रमुख हैं। यहाँ केवल इनका उपयोग किया जाता है। इस लोकनाट्य में पात्र स्वयं गीत गाते हैं। यह भी एक महत्वपूर्ण पहलू है।
- प्रस्तुत लोक नाट्य मे नमन गीत में भक्तिरस, गवलनी नाट्य में श्रृंगाररस, और वगनाट्य, रावणनृत्य में वीररस दिखाई देते हैं।
- मानवीय परदा इस नाटक की एक महत्वपूर्ण अंतर्निहित विशेषता है। क्योंकि लंबे समय से चले आ रहे इस लोकनाट्य में पर्दे के रूप में झुके हुए कलाकार एकसमान पंक्ति में खड़े होते हैं। यह क्षैतिज पंक्ति मानव परदा होती है। इस मानवीय परदे के माध्यम से पात्र प्रवेश करते हैं। विजय तेंदुलकर के नाटक 'घाशीराम कोतवाल' में हम यही नमन-खेले के इसी रूप का प्रयोग करते हुए देख सकते हैं। वर्तमान मराठी नाटकों मे लोकनाट्य का प्रयोग होते हुये दीखाई देता है।
- 'नमन-खेले' लोक नाटक पारंपरिक होने के साथ-साथ वर्तमान स्थिती मे परिवर्तनकारी भी होते दिखाई देते हैं।

सारांश

'नमन-खेले' महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले का एक पारंपरिक लोकनाटय है। इस लोक नाटय की शुरुआत देवी-देवताओं को नमन करके गणेश के आगमन के अनुष्ठान नाटक के साथ की जाती है। पूर्वरंग मे कृष्ण अवतार की दृष्टि, उनकी लीला और भगवान कृष्ण की आध्यात्मिकता को प्रकट करते हैं। साथ ही यह भी देखा जा रहा है कि इस लोकनाट्य के उत्तरंग माध्यम से रामायण में राम के संबंध में नाटय प्रसंग रावणवध के माध्यम से अच्छाई बनाम बुराई की सामाजिक धारणा को रेखांकित कर एक अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करने का प्रयास किया जा रहा है। कुल मिलाकर, लोक रंगमंच लोगों को दैनिक जीवन की निराशाजनक स्थितियों से दूर ले जाता है। और शुद्ध सुख देने की कोशिश करता है। प्रस्तुत लोकनाट्य में धर्म के साथ-साथ लोकनृत्य को भी महत्व दिया गया है। कहा जा सकता है कि इस लोकनाट्य के माध्यम से उस समय के समाज का मनोरंजन करने के साथ-साथ लोक संस्कृति, धार्मिक व्यवस्था एवं आध्यात्मिक भक्ति का ज्ञान कराने का कार्य भी प्राप्त किया है।

संदर्भ

१. मांडे प्रभाकर, लोकसाहित्याचे अंतः प्रवाह, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे, १९७५, पृ.१०४
२. व्यवहारे शरद, लोकधर्मी नाट्याची जडण-घडण, विश्वभारती प्रकाशन, नागपूर. १९९०, पृ.७